संस्थापक आर्य समाज



महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।

ऋषिराज चालीसा

लेखक :-

आचार्य पं० लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति

प्रकाशक :-

स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संस्थापक प्रधान

माता लीलावती आर्य भिक्षु परोपकारिणी न्यास

५३, आर्यवानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार

।। ओ३म्।।

ऋषिराज चालीसा

* दोहा *

चरण कमल गुरुराज के वन्दौं बारम्बार।
उनकी रज निज सीस धर प्राप्त करूं फल चार।१।
अल्प बुद्धि हूं तनु शिथिल मल चाचल्य अपार।
तौ भी मैं ऋषिराज यश वर्णौं हितचित धार।२।

जय ऋषिराज ज्ञान के सागर, जय हो विश्ववंद्य करुणाकर ।
गुर्जर प्रान्त नगर टंकारा, उनमें जन्म लिया जग तारा ।।
पुत्र यशोदा बाई जी का, आत्मज कर्षण जी का नीका ।
दयाराम पहले कहलाया, पुनि दयाल जी नाम धराया ।।
बजांगी अति विक्रम धारी, सत्यव्रती निर्भय हितकारी ।
कनक समान चमत्कृत देहा, गठित शरीर मंजूता गेहा ।।
वेद शास्त्र पढ़ने के रसिया, सत्य रूपशिव में मन बसिया ।
सन्त बने निज सीस मुंडाया, गैरिक वस्त्र सुशोभित काया ।।
दिव्य चक्षु गुरुवर पै आये, सत्य रूपशिव उन दिखलाये ।
हाथ ओ३म् ध्वज वेद विराजे, सिर उष्णीष मनोहर साजे ।।

जग में वैदिक धर्म प्रचारा, प्राणिमात्र कों मिला सहारा ।
निखिल जगत तुम्हरा यशगावे, तब करणी को सीस झुकावे ।।
ईसाई एवं मुस्लिम सारे, दादू पंथी गुरु के प्यारे ।
देव समाजी ब्रह्म समाजी, भक्त कबीरी काजी हाजी ।।
सभी करें अनुकरण तुम्हारा, मन में आदर भाव अपारा ।
दलित जातियों को अपनाया, राज सभा तक जा पहुँचाया ।।
अबलाओं में बल संचारा, विधवाओं का दुःख निवारा ।
दीन जनों के कष्ट मिटाये, उच्चासन उनको दिलवाये ।।
कन्याशाला जब दिख पाये, नाम तुम्हारा मन में आये ।
जिसने मंत्र तुम्हारा माना, उसने प्राप्त किये सुख नाना ।।

कठिन कार्य थे जग में जेते, सुगम हुए करूणा ते तेते ।
अमित तेज अपना दिखलाया, पाखंडों का दुर्ग गिराया ।।
भूत पिशाच प्रेत हट जायें, नाम तुम्हारा जब सुन पायें ।
ब्रह्मचर्य रखना सिखलाया, अतुल सुबल अपना दिखलाया ।।
सबके संकट मेटन हारे, कर्म वचन मन एक तुम्हारे ।
दृढता से सत्यार्थ प्रकाशा, तब दंभिन को हुई निराशा ।।
संत जनन के तुम रखवारे, नीच निकन्दन ईश दुलारे ।
सब विधि ऋद्धि सिद्धि के दाता, वेद धर्मरक्षक जन त्राता ।।
ओ३म् कार है जपन तुम्हारा, ओ३म् कार प्राणों से प्यारा ।
जन्म जन्म के पाप मिटाये, सब हितकर शुभ मार्ग बताये ।।

कल्पित पूजा पाठ छुड़ाया, जीवन का उद्देश्य बताया ।
जो नर तब आज्ञा अपनावें, सुख से भव सागर तर जावें ।।
जय जय जय ऋषिराज तुम्हारी, धर्म धुरंधर सत्य प्रचारी ।
प्राणि मात्र हैं ऋणी तुम्हारे, सब के सब विध कष्ट निवारे ।।
भू मंडल तुम्हरे गुण गाता, श्रद्धा से निज माथ झुकाता ।
तब करूणा का वान न पारा, नव जीवन सब जगने धारा ।।
ईश भक्ति गुरु भक्ति सिखाई, देश भक्ति महिमा समझाई ।
जो तुम्हरे विश्वासी प्यारे, छल कपटों से रहते न्यारे ।।
जो छलछिद्री कपटाचारी, बगला भक्त बड़े अधिकारी ।
सत्य शस्त्र उनको संहारे, अथवा डूब मरे हत्यारे ।।

चालीसा ऋषिराज का - पढ़ो प्रेम मन धार ।।
कल्पित माया जाल सब-छोड़ तरो संसार ।।३।।

संकटमोचन ऋषिराजाष्टक

टेक :- कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये गये है ।।
बाल समय शिव के मंदिर में शिव जी का व्रत धार पधारे ।
शिव पिंडी पर मूसा चढ़ा तब-देख उसे मन मांहि विचारे ।।
कल्पित वहशिव छोड़ दिया घर-त्याग दिया बन बीच सिधारे ।
सन्त बने पर सत्य न पाया-पुनि मथुरा में आय गये हैं ।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।१।।

मान गुरु विरजानन्द दंडी-को निज माथ झुकाय उचारे ।
वन पर्बत सब छान थका मैं-आन पड़ा अब तुम्हारे द्वारे ।।
शिव का सत्य स्वरूप दिखाओं संशय मन के मेटो सारे ।
वेदादिक पढ़ शास्त्र गुरु से-सत्यासत्य जनाय गये हैं ।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।२।।
दीक्षा लेकर के गुरु से जब-धर्म प्रचार का चक्र चलाया ।
डाकिनी-शाकिनी भूत भगे-राहु केतु का त्रास मिटाया ।।
ज्योतिष का फल भाग वृथा कह-कर्मों का सब खेल बताया ।
इस विधि से सर्वत्र भ्रमण कर-भ्रमके जाल कटाय गये हैं।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।३।।

पाखंड खंडनी झंडी को जब गंगा के तट पर जा गाड़ा ।
धर्माधर्म विचार करण हित–बाबा लोगों को ललकारा ।।
वैदिक शस्त्र उठा करके सब, पापप्रपंच का दुर्ग उखाड़ा ।
स्वामि विशुद्धानँद को जितकर, काशी धूम मचाय गये हैं ।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।४।।

फिर सुराष्ट्र महर्षि–बृजमंडल वंग विहार जगाया ।
आन प्रचार पंजाब किया तब, जालंधर काशिष्य बनाया ।।
मुन्शी से श्रद्धानन्द बन जिस, गुरुवर का शुभ कार्य चलाया ।
भाँति अनेक सुधार करा कर, जीवन भेंट चढ़ाय गये हैं ।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।५।।

छुआछूत मिटी अब तो सब-योग्य गुणी जन आदर पाते ।
जाति पांतिका ध्वंस हुआ है-सब गुणकर्म स्वभाव मिलाते ।।
भ्रममें पड़कर पतित हुए जो-शुद्धि करा निज लौटे आते ।
मदिरा माँसादिक छुड़वाकर-उल्टा मार्ग हटाय गये हैं ।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।६।।
दूर विदेशों के अधिवासी-भारत में निज राज्य चलाते ।
देश निवासी भूख मरें थे - वे धन धान्य स्वदेश पठाते ।।
देख अनर्थ रहा न गया - तब राज्य विदेशी दोषगिनाते ।
राज्य स्वदेशी के गुण गाकर राज्य प्रबन्ध दिलाय गये हैं ।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।७।।

जड़ देवों की पूजा छूटी-विद्वानों को देव बखानें ।
गंग यमुन से मोक्ष न मिलती-व्यर्थ स्नान प्रयाग का जानें ।
घट घट वासी घट है भीतर-जब चाहें उसको सनमानें ।
'नाथ' निरंजन की नित भक्ती भक्तों को सिखलाय गये हैं।।
कौन नहीं जाने जग में ऋषिराज पखंड मिटाय गये हैं ।।८।।

।। श्लोक ।।

सुखकर बलराशि-हेम कूटाभ कायम्,
कुटिल जन वनाग्निं-पण्डितानां महेशम् ।।
सकल शुभ निकायं योगिनामग्रगण्यम् ।।
भवपतिवरदासं-कार्पणिं तं नतोऽस्मि।।९।।

।। दोहा ।।

बने अनाथ सनाथ सब-विधवाओं का मान ।
जन्म जात पूजा हटी-अब तो पुजता ज्ञान ।।१।।
फहराया ध्वज ओ३म् का-किये सफल सब काज ।
'नाथ' बन गई दासता,जय जय जय ऋषिराज ।।२।।
श्रद्धा से जो नित पढ़े-अष्टक बारंबार ।
सत्यासत्य विवेक से-हो भवसागर पार ।।३।।
ऋषिराज दयानन्द की जय-पंडित लेखराम की जय ।
स्वामी श्रद्धानन्द की जय-सभी हुत आत्म जनों की जय ।।४।।



दण्डी की कुटिया

दंडी का जब द्वार जा खट खटाया, कौन है? कृटी से तभी शब्द आया ।।
(टेक)

गंभीर बन कर दयानन्द बोले-कौन हूं यही तो नहीं जाना पाया ।
यही जानने को निजू ग्राम छोड़ा-सकल त्याग संबंध सिर को मुँडाया ।।
बहुतों से मैने यही प्रश्न पूछा-किसी ने अभी तक नहीं कुछ बताया ।।
सुना आप इसका समाधान देंगे-यही जानने आपके द्वारा आया ।
गुरुवर कृपा करके कुटिया को खोलें-बताओ कि हूँ कोन किस भांतिआया
दंडी ने उत्तर सुना जब विलक्षण-निज मन में प्रेमांकुरों को उगाया ।।
हर्षित हुये द्वारा कुटिया का खोला-चरणों को छूता दयानन्द पाया ।
दृढ़तर भुजाओं को पकड़ा उठाकर-भुजायें पसारी हृदय से लगाया ।।

दण्डी की कुटिया

तुझसा ही मैं ढूंढता था मनस्वी–प्रभु की दया से कुटी में हि पाया ।
सफल कामना मैं तुम्हारी करूंगा–ऐसा जता करके ढारस बँधाया ।।
दयानन्द बोले अहोभाग्य मेरे–जिन्हें ढूंढता था उन्हें ढूंढ पाया ।
महाराज की आज करुणा हुई है–तभी आपकी शरण का लाभ पाया
इस विधि हुआ शान्त दोनों का मन –जब समय शेष रात्रि का सुख से बिताया
उठ कर के प्रातः किया ईश वन्दन –यथा विधि परस्पर गुरु शिष्य बनाया
श्रद्धा से पाठन पठन ही हुआ सब–दंडी से सत्यार्थ का मर्म पाया ।
भौतिक प्रपंचों के सबजाल टूटे–दयानन्द ने 'नाथ' को सिर झुकाया
हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो ।
हे प्रभो ! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो ।
हे प्रभो ! मुझे दुःख रूप से छुड़ाकर अमृत रुपी आनन्द की ओर ले चलो ।

भजन

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शांति क्यों न हो उसका मन मगन ।।१।।
काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली ।
इनके हनन के वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ।।२।।
ऐसा बना स्वाभाव को चित्त की शांति से तू ।
पैदा न हो ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन ।।३।।
मित्रता सब से मन में रख त्याग के बैर भाव को ।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन ।।४।।
जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत ।
उसका ही रख तू आश्रय उसकी ही तू पकड़ शरण ।।५।।
छोड़ कर राग द्वेष को मन में तू उसका ध्यान कर ।
तुझ पे दयालु होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ।।६।।
आप दया स्वरूप हैं आप ही का है आश्रय ।
कृपा की दृष्टि कीजिये मुझ पे हो जब समय कठिन ।।७।।

मन में मेरे हो चाँदना मोक्ष का रास्ता मिले।
मार के मन जो 'केवल' इन्द्रियों को करे दमन ।।८।।

भजन

ओं है जीवन हमारा, ओं प्राणाधार है।
ओं है कर्ता विधाता ओं पालन हार है ।।
ओं है दुख का विनाशक, ओं सर्वानन्द है।
ओं है बल तेजधारी, ओं करूणाकन्द है ।।
ओं सब का पूज्य है, हम ओं का पूजन करें।
ओं ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओं के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओं के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओं हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।।